Welland Gouldsmith School
Class -8
Subject -Hindi

पाठ 3 गाँव और शहर

सारांश

परिचय-प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण तथा शहरी जीवन का सजीव चित्रण किया गया है। लेखक का प्रमुख उद्देश्य गांवों तथा शहरों के आपसी संबंधों का भी ध्यान करवाना है क्योंकि इन दोनों की प्रगति पर ही राष्ट्रीय प्रगति निर्भर करती है।

अभिषेक की परीक्षाएं समाप्त हो चुकी थी। छुट्टियों में उसने अपने दादाजी के पास गांव जाने का कार्यक्रम बनाया। वह दादा जी से बहुत प्यार करता था, इसलिए गाँव उसे बेहद प्रिय था। दादाजी ने टेलीफोन पर उसे पहले ही बता दिया था कि उनका नौकर गोपी उसे बस स्टैंड से सीधा घर ले आएगा।
गाँव जाने के लिए अभिषेक बहुत रोमांचित हो रहा था। उसकी बस निश्चित समय पर गाँव पहुँच गई वहाँ गोपी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अभिषेक को देखते हो उसने प्रणाम किया और कुशल- क्षेम पूछते हुए उसका सामान उठा लिया। फिर दोनों बातें करते हुए चलने लगे।
तभी अभिषेक ने कहा-" अरे गोपी यहाँ तो सब कुछ बदला बदला नजर आ रहा है ।पिछली बार जब मैं यहाँ आया था, तब तो न यहाँ बसे चलती थी और न ही पक्के मकान बने हुए थे। अब तो यहाँ नया अस्पताल और स्कूल भी बन गया है।"
गोपी ने भी प्रसन्नता से कहा-" हाँ भैया! आप ठीक कह रहे हैं। अपने गाँव का स्वरूप बहुत परिवर्तित हो चुका है। आजकल के गांव पहले जैसे नहीं रहे। अब तो यहाँ भी सरकार ने पानी तथा बिजली को उचित व्यवस्था कर दी है ।अब हरिया भैया भी हल से नहीं ट्रैक्टर से खेती करते हैं समय-समय पर सरकारी कृषि विशेषज्ञ यहाँ आकर हमारे किसान भाइयों को खेती के वैज्ञानिक ढंगो से परिचित कराते हैं।"
अभिषेक को इन सभी बातों से हैरानी हो रही थी, परंतु उसे खुशी भी थी कि गांव उन्नतशील हो रहे हैं तथा वहां की जीवन शैली में भी परिवर्तन आ रहा है।
दोनों अपनी बातों में मग्न घर की तरफ आ रहे थे ।तभी रास्ते में उन्हें रामधन मिल गया, जो कि गोपी का घनिष्ठ मित्र था। अभिषेक को देखकर उसने प्रणाम किया। फिर चहकते हो उठता है कहा -"अभिषेक भैया! जब भी मै किसी को शहर से आते देखता हूँ,तब मेरा मन भी शहर जाने के लिए व्यग्र हो उठता है।वहाँ का जीवन कितना सुखमय तथा सुविधाओं से परिपूर्ण होता है ।
दादा जी ने गोपी और रामधन को आपस में उलझते देखा, तो अभिषेक के साथ बाहर आ गए ।उनके पूछने पर गोपी ने कहा-" दादाजी रामधन हमेशा गाँव की बुराई तथा शहर का गुणगान करता रहता है।"
तब दादाजी ने दोनों को समझाते हुए कहा- गाँव तथा शहर दोनों ही एक दूसरे के सहयोगी तथा पूरक हैं। यदि गाँव भारत की आत्मा है ,तो शहर शरीर की भाँति है।
तब दादाजी ने प्यार से समझाते हुए कहा रामधन गांव ने ही हमारे देश को एक से एक बढ़कर कवि, कलाकार, लेखक ,देशभक्त, समाज सुधारक और राजनेता दिए हैं। गाँव के कितने ही लोक-नायक लोक- नर्तक भारतीय संस्कृति की पताका विदेशों में फहरा रहे हैं। कल -कारखानों तथा भवनों के निर्माण में भी गाँवो का ही हाथ है। पुलिस, सेना आदि में भी अधिकतर ग्रामीण, देश की आंतरिक तथा बाहरी सुरक्षा की बागडोर संभाले हुए हैं ।और रामधन तुम इन्हें ही पिछड़ा हुआ कर रहे हो। इतना भी कृतज्ञ नहीं होना चाहिए।"

शब्दार्थ लिखे:-

विशेषज्ञ, व्यग्र, जिज्ञासा, दुष्परिणाम, संचार, आंतरिक, चारागाह, स्वरूप, उन्नतशील, बरबस, चकाचौंध, आवासीय, उन्नति, कृतघ्न, व्यवस्था ,आमोद- प्रमोद, पलायन, विवश, पताका,

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-
1.गाँव तथा शहर दोनों ही एक दूसरे के सहयोगी तथा पूरक हैं। यदि गाँव भारत की आत्मा है, तो शहर शरीर की भाँति हैं।
(क) यह वाक्य किसने किससे कहा है तथा क्यों?
(ख) गाँव तथा शहर दोनों ही एक दूसरे के सहयोगी तथा पूरक कैसे हैं?
(ग) भारत की आत्मा और शरीर कौन-कौन है?
(घ) गाँवो ने हमारे देश को क्या दिया है?

2.(क)अभिषेक को गाँव क्यों प्रिय था?
(ख) रामधन हमेशा शहरों का गुणगान क्यों करता था?
(ग) गाँव के लोग शहरों की ओर पलायन क्यों कर रहे हैं?
(घ) बढ़ती जनसंख्या के दुष्प्रभावो का वर्णन करें?

व्याकरण

3.अपठित गद्यांश (unseen passage in Hindi)

महेश एक स्वस्थ किन्तु निर्धन युवक था. निर्धनता के कारण उसकी पढ़ाई बचपन में ही अधूरी रह गई थी. वह अपने परिवार का भरण -पोषण मजदूरी करके जैसे-तैसे करता था. कई दिनों से उसे काम नहीं मिल रहा था. वह अत्यन्त निराश था. कई बार उसने सोचा कि वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर ले. यह विचार आते ही उसकी आँखों के सामने उसके परिवार के भूखे -प्यासे सदस्यों के चेहरे आ जाते और वह उनके लिए जीने का संकल्प कर काम की तलाश में जुट जाता।
वह काम की तलाश में भटक ही रहा था कि उसने समूह में जाते हुए लोगों को बातचीत करते हुए सुना. उसे पता लगा कि कोई बहुत बड़े संत ने पुराने बरगद के नीचे आसान लगाया है. वे सबकी समस्याओं का समाधान चुटकी बजाते ही कर देते हैं. महेश के मन में आशा की किरण जागी. वह तेज क़दमों से भीड़ के साथ चलने लगा. वहाँ पहुँचकर वह शांत भाव से बैठकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगा. उसकी प्रतीक्षा समाप्त हुई. उसकी समस्या को जानने के लिए संत जी ने उसे बुलाकर उसकी बात सुनी और उसे अपना गधा दे दिया. महेश ने ह्रदय से उन्हें धन्यवाद दिया और वहाँ से गधा लेकर चल पड़ा. वह बड़ा प्रसन्न था कि इस गधे पर वह ईंट, रोड़ी आदि ढ़ो कर काम को जल्दी समाप्त कर इसकी सवारी कर शीघ्र ही घर पहुँच जाया करेगा. ये विचार उसके मन को गुदगुदा रहे थे कि अचानक गधा गिर पड़ा और मर गया।
महेश को बड़ा दुःख हुआ किन्तु वह करता भी क्या उसने तुरंत गड्ढा खोदकर गधे को दबा दिया और वहीं बैठकर रोने लगा. एक सेठ वहाँ से जा रहा था. महेश को उस कब्र के पास रोता देख उन्होंने सोचा कि कोई दिव्य आत्मा चल बसी है, ये सोचकर उन्होंने सिर झुका कर कुछ पैसे चढ़ा दिए. महेश कुछ बोलता इससे पहले वहाँ पैसे चढ़ाने वालों की भीड़ लग गई. घबराए महेश ने सारी बात संत जी को बताई. संत ने महेश को समझाया कि कोई बात नहीं शायद भगवान् की यही मर्जी थी. " जो गधा जीते जी तेरी मदद नहीं कर पाया उसने मरकर तेरी सहायता की है. अब इस पैसे से कोई काम शुरू कर और लाभ होने पर पैसों को भलाई के कार्य में लगाना। "

उपर्युक्त अपठित गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रश्न 1-महेश कैसा युवक था, उसकी पढाई किस कारण छूट गई थी?

प्रश्न 2-वह अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करता था?

प्रश्न 3-मजदूरी न मिलने पर उसके मन में क्या विचार आया?

प्रश्न 4 -मदद शब्द का समानार्थी शब्द गद्यांश से ढूंढकर लिखिए.

प्रश्न 5- गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए.

4.(क)मुहावरो के अर्थ लिखकर उनके वाक्य प्रयोग किजिए-**pg no-233(1-20)**
अंग अंग मुस्कुराना, अंधे के आगे रोना, अँगूठा दिखाना, अंधेरे घर का उजाला ,अक्ल पर पत्थर पड़ना, अगर मगर करना, अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना ,अपनी खिचड़ी अलग पकाना ,अपना ही राग अलापना ,अपने पैरों पर खड़ा होना ,आँखों का तारा, आँखें तरसना, आँखें बिछाना, आँखों में धूल झोंकना, आँखों में खून उतरना, आँखें खुलना। आँसू पीकर रह जाना ,आँचल पसारना, आकाश के तारे तोड़ना, आकाश पाताल एक करना,

(ख) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द:- **pg no-85(1-20)**

जो कभी बूढ़ा न हो, जो कभी ना मरे ,जो आँखों के सामने ना हो, जहाँ जाना संभव ना हो, जो कुछ ना करता हो, जिसकी उपमा न हो, जिसकी तुलना न की जा सके, जो इस लोक से संबंधित हो, जो दूसरे लोग से संबंधित हो, युगों से चला आने वाला, जो काम कठिन हो ,दूसरों के मन की जानने वाला ,सदा रहने वाला, किए गए उपकार को मानने वाला, जो पृथ्वी से संबंधित हो, दोपहर के बाद का समय ,दोपहर के पूर्व का समय, जो कल्पना से परे हो ,किए गए उपकार को न मानने वाला, प्रिय बोलने वाली स्त्री,